।। पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेदः ।।

(पुष्टि प्रवाह और मर्यादा के मार्ग, सर्ग और फल की पृथकताका निरूपण)

पुष्टि–प्रवाह–मर्यादा विशेषेण पृथक्–पृथक्।। जीव–देह–क्रिया–भेदैः प्रवाहेण फलेन च।।१।।
वक्ष्यामि सर्वसन्देहा न भविष्यन्ति यत् श्रुतेः।।

पृथक्–पृथक् =	अलग–अलग	**वक्ष्यामि** =	कह रहा हूं
विशेषेण =	विषेश रूपसे	**यत्** =	जिसे
जीव–देह–क्रिया–भेदैः =	जीव देह और क्रियाके भेदसे	**श्रुतेः** =	सुनने पर
प्रवाहेण =	प्रवाहसे	**सर्वसन्देहाः** =	सब प्रकारके सन्देह
च = और **फलेन** =	फलसे	**न** =	नहीं
पुष्टि–प्रवाह–मर्यादाः =	पुष्टि, प्रवाह और मर्यादा	**भविष्यन्ति** =	होंगे.
(**अहं** =	मैं)		

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :* ***पुष्टि, प्रवाह, मर्यादा***
- **प्रश्न :** इस ग्रन्थमें किस विषयका निरूपण किया गया है?

(तीनों मार्गोंके भेदको सिद्ध करनेवाले प्रमाणोंका संकलन)

भक्तिमार्गस्य कथनात् पुष्टिर् अस्तीति निश्चयः।।२।।

भक्तिमार्गस्य =	भक्तिमार्गका	**इति** =	ऐसा
कथनात् =	कथन होनेसे	**निश्चयः** =	निश्चय
पुष्टिः =	पुष्टि	(**अस्ति** =	है).
अस्ति =	है		

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :* ***भक्तिमार्ग, पुष्टि***
- **प्रश्न :** पुष्टिके होनेमें क्या प्रमाण है?

‘‘द्वौ भूतसर्गौ’’वित्युक्तेः प्रवाहोऽपि व्यवस्थितः। वेदस्य विद्यमानत्वात् मर्यादापि व्यवस्थिता।।३।।

द्वौ =	दो	(**अस्ति किंच** =	है और)
भूतसर्गौ =	जीवसृष्टिएं	**वेदस्य** =	वेदके
इति =	ऐसा	**विद्यमानत्वात्** =	विद्यमान् होनेसे
उक्तेः =	कह होनेसे	**मर्यादा** =	मर्यादा
प्रवाहः =	प्रवाह	**अपि** =	भी
अपि =	भी	**व्यवस्थिता** =	अन्य दो मार्गोंसे अलग है
व्यवस्थितः =	अन्य दो मार्गोंसे अलग		

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :* ***भूत, सर्ग, वेद, मर्यादा***
- **प्रश्न :** प्रवाह और मर्यादा की सिद्धि किस आधार पर होती है?

(पुष्टिमार्ग एक भिन्न मार्ग है इस विषयमें विशेष प्रमाण)

कश्चिदेव हि भक्तो हि ‘‘यो मद्भक्तः’’ इतीरणात्। सर्वत्रोत्कर्षकथनात् पुष्टिरस्तीति निश्चयः।।४।।
न सर्वोऽतः प्रवाहाद्धि भिन्नो वेदाच्च भेदतः। ‘‘यदा यस्ये’’ति वचनात् ‘‘नाहं वेदैः’’इतीरणात्।।५।।

यो =	जो	**उत्कर्षकथनात्** =	(भक्तकी) श्रेष्ठता कही है अतः
मद् भक्तः =	मेरा भक्त (है वह मुझको प्रिय है)	**भक्तः** =	भक्त
इति =	ऐसा (भगवानने)	**कश्चित् एव** =	कोई ही
ईरणात् =	कहा है	(**भवति** =	होते हैं)
(**किंच** =	और)	**सर्वः न** =	सब नहीं.
सर्वत्र =	सब जगह	**यदा** =	जब

यस्य = जिसको (भगवान् कृपाका दान करते हैं तब वह लोक-वेदमें अपनी परिनिष्ठित मतिको छोड देता है)

इति = इस

वचनात् = वचनसे (और)

न = न तो

अहं = मैं

वेदैः = वेदसे (न तपसे, न दानसे...देखा जा सकता हूं, किन्तु केवल अनन्य भक्तिसे देखा जा सकता हूं)

इति = ऐसा

ईरणात् = कहा होनेसे (पुष्टिमार्ग)

प्रवाहात् = प्रवाहसे

ही = भी

भिन्नः = अलग है और

वेदतः = वेदसे

(**अपि** = भी)

भेदतः = अलग होनेके कारण

पुष्टिः = पुष्टि

हि = अवश्य

अस्ति = है

इति = ऐसा

निश्चयः = निश्चित होता है

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :* ***भक्त***
- **प्रश्न :** पुष्टिके मर्यादा और प्रवाह से भिन्न होनेमें क्या प्रमाण है?

मार्गैकत्वेऽपि चेद् अन्त्यौ तनू भक्त्यागमौ मतौ। न तद् युक्तं सूत्रतो हि भिन्नो युक्त्या हि वैदिकः।।६।।

(शंका :)

मार्गैकत्वे अपि = भक्तिमार्ग ही एक मार्ग है (ऐसा यदि मान लिया जाये तो) भी

अन्त्यौ = (मर्यादा और प्रवाह ये) अन्तिम दोको

भक्त्यागमौ = भक्तिमें सहायक (भक्तिमार्गके)

तनू = अङ्गभूत

मतौ = मानने चाहिये.

(समाधान :)

इति = ऐसा

चेत् = यदि हो तो

तत् = वो

न युक्तं = ठीक नहीं है

हि = क्योंकि

सूत्रतः = सूत्रसे

युक्त्या = युक्तिसे

वैदिकः = वैदिक मार्ग)

हि = निश्चय ही

भिन्नः = अलग है

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :* ***मार्ग, भक्ति, सूत्र, युक्ति, वैदिक***
- **प्रश्न :** प्रवाह और मर्यादा को भक्तिके अंगरूप ही क्यों नहीं मान लेना चाहिये?

जीव-देह-कृतीनां च भिन्नत्वं नित्यता श्रुतेः। यथा तद्वत् पुष्टिमार्गे द्वयोरपि निषेधतः।।७।।

यथा = जिस प्रकारसे

नित्यताश्रुतेः = नित्यता बतलानेवाले वेदवचनोंसे

जीवदेहकृतीनां = (आसुरीजीव तथा दैवी जीवोंके) जीव-देह-कृतिकी

भिन्नत्वं = भिन्नता है

तद्वत् = वैसे

पुष्टिमार्गे = पुष्टिमार्गमें

द्वयोः अपि = (प्रवाह और मर्यादा) दोनोंका

निषेधतः = निषेध होनेसे (दैवी जीवोंके अन्तर्गत पुष्टि और मर्यादा जीवोंके भी स्वरूप-देह-कर्ममें भिन्नता है).

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :* ***जीव, देह, श्रुति, पुष्टिमार्ग, प्रमाण***
- **प्रश्न :** जिस प्रकारसे तीनों मार्ग एक-दूसरेसे भिन्न हैं उस प्रकार क्या उन-उन मार्गोंके जीव, उनके देह, उनकी कृति आदि भी भिन्न-भिन्न हैं? यदि भिन्न हैं तो कैसे?

प्रमाणभेदाद् भिन्नो हि पुष्टिमार्गो निरूपितः।।

प्रमाणभेदात् = (इस प्रकार) प्रमाणके भेदसे

पुष्टिमार्गः = पुष्टिमार्ग (मर्यादामार्ग और प्रवाहमार्गसे)

भिन्नः = अलग है यह

निरूपितः = निरूपित हुआ.

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :* ***पुष्टिमार्ग, प्रमाण***

(पुष्टि-प्रवाह-मर्यादाके सर्ग भिन्न होनेके हेतु)

सर्गभेदं प्रवक्ष्यामि स्वरूपाङ्ग-क्रियायुतम्।।८।। इच्छामात्रेण मनसा प्रवाहं सृष्टवान् हरिः।।
वचसा वेदमार्गो हि पुष्टिं कायेन निश्चयः।।९।।

स्वरूपाङ्गक्रियायुतं =	स्वरूप अङ्ग और क्रिया के साथ	**वचसा** =	वाणिसे
सर्गभेदं =	सर्गके भेदको	**वेदमार्गं** =	वेदमार्गका और
प्रवक्ष्यामि =	कहता हूं.	**हि** =	निश्चय ही
हरिः =	श्रीकृष्णने	**कायेन** =	शरीरसे
इच्छामात्रेण =	इच्छामात्रसे	**पुष्टिं** =	पुष्टिमार्गकी
मनसा =	मनसे	**सृष्टवान्** =	सृष्टि की है
प्रवाहं =	प्रवाहको,	**(इति)निश्चयः** =	ऐसा निश्चय है

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :* ***सर्ग***
- **प्रश्न :** पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह की सृष्टि भगवान् कैसे करते हैं?

(तीनों मार्गोंके भिन्न-भिन्न फल होनेके पीछे हेतु)

मूलेच्छातः फलं लोके वेदोक्तं वैदिकेऽपि च। कायेन तु फलं पुष्टौ भिन्नेच्छातोऽपि नैकधा।।१०।।

लोके =	लोक (प्रवाहमार्ग) में	**पुष्टौ** =	पुष्टिमार्गमें
मूलेच्छातः =	मूल इच्छासे	**तु** =	तो
फलं =	फल	**कायेन** =	प्रभुकी कायासे
(भवति =	प्राप्त होता है),	**फलं** =	फल प्राप्त होता है
वैदिके =	वैदिक (मर्यादामार्ग) में	**(एवं** =	इस तरह)
अपि =	तो	**भिन्नेच्छातः** =	भिन्न-भिन्न फल देनेकी इच्छाके होनेसे
वेदोक्तं =	वेदमें कहा गया	**अपि** =	भी (मार्ग सब)
(फलं भवति =	फल प्राप्त होता है)	**एकधा** =	एक प्रकारके
च =	और	**न** =	नहीं हैं.

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :* ***फल, लोक, वेद, पुष्टि***
- **प्रश्न :** पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह मार्गोंके फल क्या होते हैं?

(जीवोंके त्रिविध सर्ग)

''तानहं द्विषतो'' वाक्याद् भिन्ना जीवाः प्रवाहिणः। अत एवेतरौ भिन्नौ सान्तौ मोक्षप्रवेशतः।।११।।

द्विषतः =	द्वेश करनेवाले	**भिन्नाः (सन्ति)**=	अलग(हैं).
तान् =	उन जीवोंको	**अतः एव** =	इसीलिये
अहं =	मैं (अशुभ आसुरी योनिमें डालता हूं)	**इतरौ** =	दूसरे दो (मर्यादा-पुष्टिजीवोंका)
(इति)वाक्यात्=	इस भगवद्वाक्यसे	**मोक्षप्रवेशतः** =	मोक्षमें प्रवेश होता है अतः
प्रवाहिणः =	प्रवाही	**सान्तौ** =	अन्तवाले होनेसे
जीवाः =	जीव	**भिन्नौ** =	दोनों भिन्न हैं.

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :* ***जीव, प्रवाही, मोक्ष***
- **प्रश्न :** मार्गोंके तीन सर्गोंकी ही तरह क्या तीन तरहके जीवोंके सर्ग भी होते हैं? कैसे?

(पुष्टिसर्गमें जीव-देह-क्रियाओंके विशेष उपभेद)

तस्माज् जीवाः पुष्टिमार्गे भिन्नाएव न संशयः। भगवद्रूपसेवार्थं तत्सृष्टिर् नान्यथा भवेत्।।१२।।

तस्मात् =	इसलिये	**तत्सृष्टिः** =	वह पुष्टिजीवोंकी सृष्टि
पुष्टिमार्गे =	पुष्टिमार्गमें	**भगवद्रूपसेवार्थं** =	श्रीकृष्णकी रूपसेवाकेलिये
जीवाः =	जीव	**(जाता अस्ति** =	प्रकट हुई है).
भिन्नाः =	अलग	**अन्यथा** =	यदि यह प्रयोजन न होता तो
एव (सन्ति) =	ही हैं (इसमें कोई)		(पुष्टिजीवोंकी सृष्टी ही)
संशयः =	शङ्का	**न भवेत्** =	नहीं होती.
न (अस्ति) =	नहीं है		

➢ *महत्त्वपूर्ण शब्द : **जीव, पुष्टिमार्ग, भगवान्, सृष्टि***

➢ **प्रश्न :** पुष्टिसर्गके पीछे प्रभुविचारित प्रयोजन क्या है?

स्वरूपेणावतारेण लिङ्गेन च गुणेन च। तारतम्यं न स्वरूपे देहे वा तत्क्रियासु वा।।१३।।
तथापि यावता कार्यं तावत् तस्य करोति हि।

स्वरूपेण =	स्वरूपसे	**वा** =	अथवा
अवतारेण =	अवतारसे	**तत्क्रियासु** =	उनकी क्रियामें
लिङ्गेन =	चिह्नसे	**तारतम्यं** =	भेद
च =	और	**न (अस्ति)** =	नहीं (है)
गुणेन =	गुणसे	**तथापि** =	फिर भी
च =	भी	**यावता** =	जितने (तारतम्यसे)
(**पुष्टिजीवानां** =	पुष्टिजीवोंके)	**कार्यं** =	कार्यको करना होता है
स्वरूपे =	स्वरूपमें	**तावत् हि** =	उतने
वा =	अथवा	**तस्य** =	तारतम्यको
देहे =	देहमें	**करोति** =	करते हैं.

➢ *महत्त्वपूर्ण शब्द : **अवतार***

➢ **प्रश्न :** पुष्टिसर्गमें जीव, देह और क्रिया कैसे होते हैं?

ते हि द्विधा शुद्ध-मिश्र-भेदान् मिश्रास् त्रिधा पुनः।।१४।। प्रवाहादि-विभेदेन भगवत्-कार्यसिद्धये।
पुष्ट्या विमिश्राः सर्वज्ञाः प्रवाहेण क्रियारताः।।१५।। मर्यादया गुणज्ञास्ते शुद्धाः प्रेम्णाऽतिदुर्लभाः।

ते हि =	वे (पुष्टिजीव) अवश्य ही	**प्रवाहेण** =	प्रवाहसे
शुद्धमिश्रभेदात् =	शुद्ध और मिश्रके भेदसे	**विमिश्राः** =	विशेषकरके मिश्र जीव
द्विधा (भवन्ति) =	दो प्रकारके होते हैं.	**क्रियारताः**(भवन्ति)=	क्रियापरायण (होते हैं. और)
पुनः =	और फिर	**मर्यादया** =	मर्यादासे
भगवत्कार्यसिद्धये =	भगवत् कार्यकी सिद्धिकेलिये	(**विमिश्राः** =	विशेषकरके मिश्र जीव)
मिश्राः =	मिश्र(पुष्टिजीव)	**गुणज्ञाः** =	गुणोंको जाननेवाले
प्रवाहादिविभेदेन =	प्रवाह(मर्यादा-पुष्टि) आदिके भेदसे	(**भवन्ति किंच** =	होते हैं). और
त्रिधा (सन्ति) =	तीन प्रकारके हैं.	**प्रेम्णा** =	प्रेमसे
पुष्ट्या =	पुष्टिसे	**शुद्धाः** =	शुद्ध
विमिश्राः =	विशेषकरके मिश्र जीव	**ते** =	वे
सर्वज्ञाः (भवन्ति) =	सब कछु जाननेवाले होते हैं,	**अतिदुर्लभाः(भवन्ति)** =	अत्यन्त दुर्लभ होते हैं).

➢ *महत्त्वपूर्ण शब्द : **शुद्ध, मिश्र***

➢ **प्रश्न :** १. पुष्टिजीव कितने प्रकारके होते हैं? २. शुद्ध और मिश्र पुष्टिजीवके लक्षण क्या हैं?

(पुष्टिमार्गीय फलका विशेष निरूपण)

एवं सर्गस्तु तेषां हि फलं त्वत्र निरूप्यते।।१६।। भगवानेव हि फलं स यथाविर्भवेद् भुवि।
गुण-स्वरूप-भेदेन तथा तेषां फलं भवेत्।।१७।।

एवं =	इस प्रकारसे	**फलं** =	फल हैं,
तेषां =	उनकी	**स** =	वो
सर्गः तु =	सृष्टिका तो	**भुवि** =	पृथ्वीपर
(**निरूपितं** =	निरूपण हुवा. अब)	**गुणस्वरूपभेदेन**=	गुण और स्वरूप के भेदसे
अत्र तु =	यहां तो	**यथा** =	जिस प्रकारसे
फलं =	(पुष्टिमार्गके) फलका	**आविर्भवेत्** =	प्रकट होते हैं
निरूप्यते =	निरूपण करते हैं.	**तथा** =	उस प्रकारसे
हि =	निश्चय	**तेषां** =	उन(पुष्टिमार्गीओंको)
भगवान् एव =	भगवान् ही (पुष्टिमार्गमें)	**फलं भवेत्** =	फल (प्राप्त) होता है

- *महत्त्वपूर्ण शब्द : **सर्ग, भगवान्, आविर्भाव, फल***
- **प्रश्न :** पुष्टिमार्गका फल क्या होता है?

आसक्तौ भगवानेव शापं दापयति क्वचित्। अहङ्कारेऽथवा लोके तन्मार्गस्थापनाय हि।।१८।।

आसक्तौ =	अन्यमें आसक्ति होनेपर	**क्वचित** =	कभी
अथवा =	या	**भगवान्** =	भगवान्
अहङ्कारे =	अभिमान होनेपर	**एवं** =	इस प्रकारसे
लोके =	भूतलपर	**शापं** =	शाप
तन्मार्गस्थापनाय=	पुष्टिमार्गकी स्थापनाकेलिये	**दापयति** =	दिवाते हैं.

- *महत्त्वपूर्ण शब्द : **आसिक्ति, भगवान्, शाप, अहंकार, मार्ग***
- **प्रश्न :** १. पुष्टिजीवोंको भी शाप दिया गया हो ऐसा पुराणोंमें पढ़नेमें आता है. ऐसा क्यों?

न ते पाषण्डतां यान्ति न च रोगाद्युपद्रवाः। महानुभावाः प्रायेण शास्त्रं शुद्धत्वहेतवे।।१९।।

ते =	वो शापित पुष्टिजीव	**प्रायेण** =	अधिक करके
पाषण्डतां =	ढोंगी-पाखंडी	(**ते**)**महानुभावाः** =	(वे)महानुभाव
न यान्ति =	नहीं बनते हैं.	(**एव भवन्ति** =	ही होते हैं).
च (**तेषां**) =	और (उनको)	**शास्त्रं** =	शाप (उनकी)
रोगाद्युपद्रवाः =	रोग आदि उपद्रव भी	**शुद्धत्वहेतवे** =	शुद्धिका कारण
न (**भवन्ति**) =	नहीं (होते हैं)	(**भवति** =	बनाता है).

- *महत्त्वपूर्ण शब्द : **पाषंड, शास्त्र***
- **प्रश्न :** १. पुष्टिजीवको शाप होने पर क्या वो पुष्टिमार्गसे बाहर हो जाते हैं?

भगवत्-तारतम्येन तारतम्यं भजन्ति हि।

भगवत्तारतम्येन =	प्रभुके स्वरूपमें प्रकट होते तारतम्यके अनुसार	**तारतम्यं** =	तर-तम भावको
(**ते**) **हि** =	वो भी	**भजन्ति** =	प्राप्त होते हैं.

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :*
- **प्रश्न :** शाप होनेके बाद भगवान्के प्रति पुष्टिजीवका व्यवहार कैसा होता है?

वैदिकत्वं लौकिकत्वं कापट्यात् तेषु नान्यथा।।२०।। वैष्णवत्वं हि सहजं ततोऽन्यत्र विपर्ययः।।

तेषु =	उनमें	**वैष्णवत्वं** =	वैष्णवता
वैदिकत्वं =	वैदिकता	**हि** =	ही उनमें
(**च** =	और)	**सहजं** =	सहज होती है.
लौकिकत्वं =	लौकिकता	**अन्यत्र** =	इसके अतिरिक्त सब जगह
कापट्यात् =	कपटसे	**ततः** =	उससे
(**अस्ति** =	होती है)	**विपर्ययः** =	विरुद्ध
अन्यथा =	ओर तरहसे(अर्थात् स्वाभाविक)	(**अस्ति** =	होता है).
न अस्ति =	नहीं होती है).		

- *महत्त्वपूर्ण शब्द : **वैदिक, लौकिक, वैष्णवता***
- **प्रश्न :** पुष्टिजीव यद्यपि प्रभुपरायण होते हैं फिर भी उनमें लौकिक-वैदिक धर्मोंका आचरण क्यों देखा जाता है?

(कर्मोंकी गहन गतिके कारण सदा परिभ्रमणशील पुष्टि-प्रवाह-मर्यादारूप तीनमेंसे कोई एक मार्गमें आजानेवाले उस मार्गके न होने पर भी ऐसा आभास प्रकट करनेवाले चर्षणी जीव)

सम्बन्धिनस्तु ये जीवाः प्रवाहस्थास् तथाऽपरे।।२१।। 'चर्षणी'शब्दवाच्यास् ते ते सर्वे सर्ववर्त्मसु ।
क्षणात् सर्वत्वम् आयान्ति रुचिस् तेषां न कुत्रचित्।।२२।। तेषां क्रियाऽनुसारेण सर्वत्र सकलं फलम् ।

ये जीवाः =	जो जीव	**सर्वत्वं** =	सर्वताको
सम्बन्धिनः =	सम्बन्धवाले	**आयान्ति** =	प्राप्त हो जाते हैं.
तथा (ये) =	और (जो)	**तेषां** =	उनकी
प्रवाहस्थाः =	प्रवाहमार्गी	**रुचिः** =	रुचि
अपरा (जीवाः)=	दूसरे (जीव हैं)	**कुत्रचित्** =	कहीं भी
ते तु सर्वे =	वे तो सभी	**न (भवति)** =	नहीं (होती है).
'चर्षणी'शद्बवाच्याः =	'चर्षणी'नामसे पहचाने जाते हैं.	**सर्वत्र** =	सब जगह
ते सर्वे =	वे सब जगह	**तेषां** =	उनको
सर्ववर्त्मसु =	सब कुछ करनेवाले (होते हैं.	**क्रियानुसारेण** =	क्रियाके अनुसार
	और जहां जाते हैं वहां)	**सकलं** =	खंडित/अपूर्ण
क्षणात् =	क्षणभरमें	**फलं (भवति)** =	फल (होता है).

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :* ***जीव, चर्षणी, रुचि***
- **प्रश्न :** चर्षणी जीव कैसे होते हैं? चर्षणी जीवोंको क्या फल प्राप्त होता है?

(चर्षणीके जैसे प्रवाहमार्गीय जीवोंके दो उपभेद)

प्रवाहस्थान् प्रवक्ष्यामि स्वरूपाङ्गक्रियायुतान्।।२३।। जीवास्ते ह्यासुराः सर्वे 'प्रवृत्तिं चेति'वर्णिताः ।
ते च द्विधा प्रकीर्त्यन्ते ह्यज्ञ-दुर्ज्ञ-विभेदतः।।२४।। दुर्ज्ञास्ते भगवत्प्रोक्ता ह्यज्ञास् तान् अनु ये पुनः ।

स्वरूपाङ्गक्रियायुतान् =	स्वरूप, अङ्ग और क्रिया सहित		
प्रवाहस्थान् =	प्रवाहमार्गीओंके विषयमें	**अज्ञ-दुर्ज्ञविभेदतः** =	अज्ञ और दुर्ज्ञ ऐसे भेदसे
प्रवक्ष्यामि =	कहूंगा.	**द्विधा** =	दो प्रकारके
ते सर्वे जीवाः =	वो सभी जीव	**प्रकीर्त्यन्ते** =	कहे जाते हैं.
हि =	निश्चितरूपसे	**(ये** =	जो जीव)
आसुराः =	आसुर हैं.	**भगवत्प्रोक्ताः** =	भगवान् द्वारा कहे गये हैं
प्रवृत्तिं च =	प्रवृत्ति और (निवृत्ति को वे	**ते = वे दुर्ज्ञाः** =	दुर्ज्ञ आसुरी जीव हैं.
	नहीं जानते हैं...)	**ये पुनः** =	जो जीव फिर
इति =	इस प्रकारसे (भगवानने गीतामें)	**तान्** =	उनका (दुर्ज्ञ आसुरी जीवोंका)
वर्णिताः =	वर्णन किया है	**अनु** =	अनुकरण करते हैं
ते च =	वो जीव भी	**ते अज्ञाः** =	वे अज्ञ आसुरी जीव कहे जाते हैं.

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :* ***आसुर, अज्ञ, दुर्ज्ञ***
- **प्रश्न :** प्रवाही जीवोंकी क्या पहचान होती है? उनके कितने प्रकार होते हैं?

प्रवाहेऽपि समागत्य पुष्टिस्थस् तैर्न युज्यते।।२५।। सोऽपि तैस् तत्कुले जातः कर्मणा जायते यतः।।

पुष्टिस्थः =	पुष्टिमार्गी	**तैः** =	उन(पुष्टिमार्गी)के साथ
प्रवाहे =	प्रवाहमार्गमें	**(न युज्यते** =	मिलि नहीं जाता है).
समागत्य अपि =	आकर भी	**यतः** =	क्योंकि (वह)
तैर्नसह =	उनके साथ	**कर्मणाः** =	कर्मोंके कारण (पुष्टि-मर्यादा-आसुरी जीव)
न युज्यते =	मिल नहीं जाता है (इसी तरह)	**तत्कुले** =	उस कुलमें
सः अपि =	प्रवाहमार्गी भी	**जातः** =	जन्मा (**अस्ति** = होता है).

- *महत्त्वपूर्ण शब्द :*
- **प्रश्न :** आसुर कुलमें भक्तोंका जन्म क्यों होता है? क्या आसुर कुलमें जन्म होनेसे पुष्टिजीव भी आसुरी बन जाता है?

।। इति श्रीवल्लाभाचार्यविरचितः पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेदः सम्पूर्णः ।।